प्रकृति महाकुंभ

"वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर"

भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज

प्रकृति महाकुंभ–वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर

गंगा पण्डाल के बगल, सूचना विभाग प्रदर्शनी, परेड ग्राउण्ड, सेक्टर नं.–01, महाकुंभ क्षेत्र, प्रयागराज

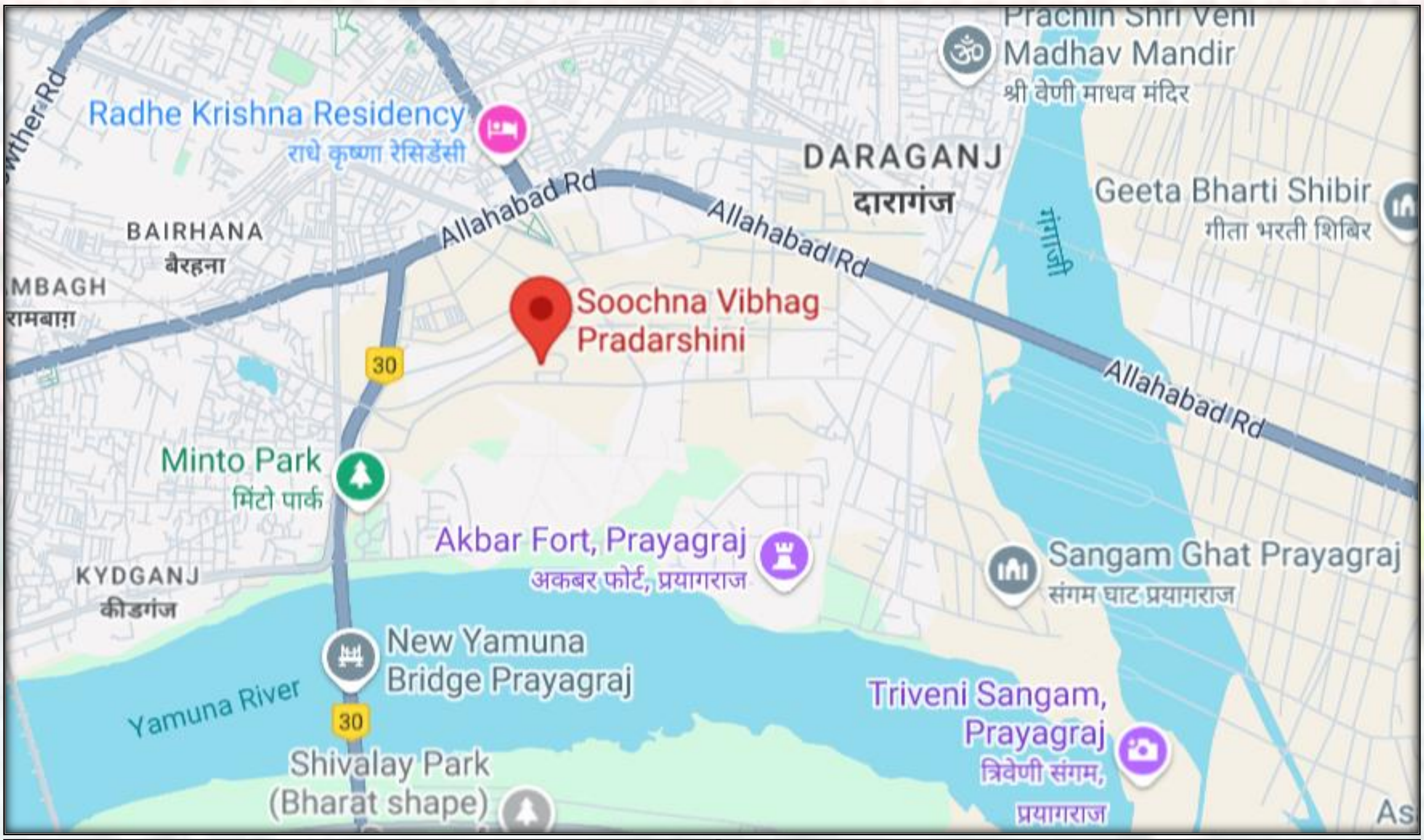

पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज–एक परिचय

वानिकी अनुसंधान एवं विस्तार में अग्रणी केन्द्र भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज (पूर्ववर्ती–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र) की स्थापना वर्ष 1992 में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के अंतर्गत स्वायत्त परिषद्–भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा की गयी थी। केन्द्र का मुख्य उद्देश्य कृषिवानिकी एवं पारिस्थितिक पुनर्स्थापन क्षेत्र में व्यावसायिक उत्कृष्टता को समृद्ध करना है। केन्द्र का कार्यक्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश के तीन कृषि जलवायु क्षेत्र (मध्य गंगा के मैदान, ऊपरी गंगा के मैदान तथा मध्य पठार व पहाड़ियां) हैं।

केन्द्र की अनुसंधान सम्बन्धी गतिविधियाँ अवक्रमित पारिस्थितिक प्रणालियों, क्षतिग्रस्त स्थलों के पुनर्वास तथा कृषिवानिकी को प्रोत्साहन देने के साथ ही वन संसाधनों के संरक्षण व सदुपयोग हेतु उपभोक्ता समूहों को सुलभ तकनीकी सहयोग प्रदान करना है। केन्द्र द्वारा अनुसंधान के अतिरिक्त विभिन्न हितधारकों के लिए वानिकी विस्तार, तकनीकी प्रदर्शन तथा क्षमता निर्माण प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया है। यह केन्द्र राज्य वन विभाग, किसान, वृक्ष उत्पादक, छात्र, गैर सरकारी संगठन, उद्यमी तथा वन आधारित उद्योगों आदि के सहयोग से सम्पन्न करता है।

दृष्टि

स्थान एवं परिस्थिति अनुरूप कृषिवानिकी एवं वृक्षारोपण पद्धतियों के विकास, अवक्रमण एवं उत्खनन से क्षतिग्रस्त क्षेत्रों के पुनर्स्थापन द्वारा वृक्ष आवरण में अभिवृद्धि।

उद्देश्य

- निम्नीकृत पारिस्थितिक तंत्र एवं अवक्रमित क्षेत्रों की पुनर्स्थापना तथा कृषिवानिकी का विकास।
- वन संसाधनों के संरक्षण और सतत् उपभोग हेतु उपयोगकर्ता समूहों को अनुसंधान परिणामों एवं तकनीकों का प्रसार करना।
- वानिकी अनुसंधान, शिक्षा एवं विस्तार के क्षेत्र में अग्रणी संस्थान का सहयोग करना।

स्थापना के 32 वर्षों की यात्रा में यह केन्द्र विभिन्न वानिकी आवश्यकताओं में प्रयुक्त होने वाली वृक्ष प्रजातियों के सम्मिश्रण, पौधशाला एवं वृक्षारोपण तकनीकों के विकास, निम्न आर्द्रता वाली लवणीय/क्षारीय भूमि के सुधार, खनित क्षेत्रों के पुनर्स्थापन, जलवायु अनुरूप वृक्ष प्रजातियों और उनके प्रतिरूपों (क्लोन) के परीक्षण की दिशा में उन्नत नवाचार के प्रभावी संस्थान के रूप में उभर कर आया है।

स्थानः

प्रयागराज, अपने शैक्षणिक वातावरण के लिए प्रसिद्ध तथा तीन नदियों क्रमशः गंगा, यमुना एवं पौराणिक सरस्वती के संगम स्थल पर अवस्थित है। 20वीं सदी में प्रयागराज (पूर्व में इलाहाबाद) स्वतंत्रता संग्राम का मुख्य केन्द्र था। वर्तमान समय में यहां पर कई राष्ट्रीय स्तर के संस्थान एवं विश्वविद्यालय स्थित हैं।

प्रकृति महाकुंभ

पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर का

प्रयागराज महाकुंभ–2025 में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के निर्देशन में पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा **''प्रकृति महाकुंभ–पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर''** की स्थापना 13 जनवरी से 26 फरवरी 2025 के मध्य किया गया। शिविर का उदघाटन दिनांक 13.01. 2025 को किया गया। शिविर का मुख्य उद्देश्य भारतवर्ष में परिषद के संस्थानों/केन्द्रों द्वारा वानिकी के माध्यम से पर्यावरण सुधार हेतु विभिन्न तकनीकी विधाओं तथा आय को बढ़ाने हेतु किये जा रहे प्रयासों से अवगत कराना था। प्रदर्शन शिविर में समय–समय पर विभिन्न विधाओं यथा नाट्य मंचन, पौध वितरण तथा विभिन्न कार्यक्रमों आदि के माध्यम से वानिकी को बढ़ावा देने हेतु जागरूकता फैलाने का प्रयास किया गया।

केन्द्र द्वारा स्थापित प्रकृति महाकुंभ के दौरान परिषद की महानिदेशक एवं कुलाधिपति, वन अनुसंधा संस्थान, समविश्वविद्यालय, देहरादून, श्रीमती कंचन देवी, भा.व.से. का भी आगमन हुआ। उनके आगमन पर **''पौधारोपण के माध्यम से नदी पुनरूद्धार एवं पर्यावरण सुधार''** विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी मुख्य अतिथि स्वयं महानिदेशक थीं। आयोजित संगोष्ठी में महानिदेशक महोदया ने विचार व्यक्त करते हुए नदी पुनरूद्धार एवं पर्यावरण सुधार के लिए परिषद की ओर से देश की 14 प्रमुख नदियों को पुनर्जीवित करने के उपक्रमों के बारे में जानकारी दी। साथ ही पूर्वी उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के पुनरूद्धार व प्रयागराज केन्द्र के प्रयासों की सराहना की। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने नदी पुनरूद्धार एवं पर्यावरण सुधार में वानिकी की भूमिका पर विचार व्यक्त किए। उन्होने कहा कि वन और नदी पारिस्थितिकी तंत्र एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वनों के संरक्षण एवं वन क्षेत्र बढ़ाने से नदियों की स्वच्छता एवं अविरलता सुनिश्चित होती है।

प्रदर्शन शिविर के आयोजन के दौरान देश के विभिन्न प्रख्यात वानिकी संस्थानों के वैज्ञानिकों एवं वानिकी विदों आदि का लगातार आगमन होता रहा, जिससे उनके द्वारा प्रदेश की जलवायु परिवर्तन एवं वानिकी क्षेत्रों को बढ़ाने हेतु विभिन्न बिन्दुओं पर विचार प्रस्तुत किये गए। उन्होने गंगा–यमुना के जलीय तंत्र में भी सुधार लाने पर चर्चा किया।

बाँस गैलरी

भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा प्रकृति महाकुंभ–पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर में बाँस की विभिन्न प्रजातियों यथा बैम्बूसा वैल्गरीस–ग्रीन, बैम्बूसा वैल्गरीस–वामिन, बैम्बूसा पॉलीमोर्फा, बैम्बूसा वैल्गरीस–स्ट्रीयाटा, बैम्बू बग्स, डेण्ड्रोकैलेमस जिजिन्थस, बैम्बूसा बाल्कोआ, सिजोस्टाचियम पग्रेसिल, बैम्बूसा बैम्बोस, डेण्ड्रोकैलेमस स्ट्रिक्टस, डैण्ड्रोकैलेमस लौंगिस्पैथस, डैण्ड्रोकैलेमस मेम्ब्रानेसियस, जिजन्टोक्लोआ मैगांग, जिजन्टोक्लोआ अट्रोवोलासिया, थायसोस्टाचिस ओलिवेरी, बैम्बूसा टुल्डा एवं डेण्ड्रोकैलेमस जिजिन्थस आदि के समायोजन से एक सुन्दर गलियारे का निर्माण किया गया, जो कि महाकुंभ–2025 में आने वाले आगन्तुकों के लिए ज्ञान एवं चर्चा का विषय था।

Dendrocalamus longispathus

Gigantochloa manggong

Gigantochloa atrovolacea

Dendrocalamus membranaceus

Schizostachyum pergracile

Dendrocalamus strictus

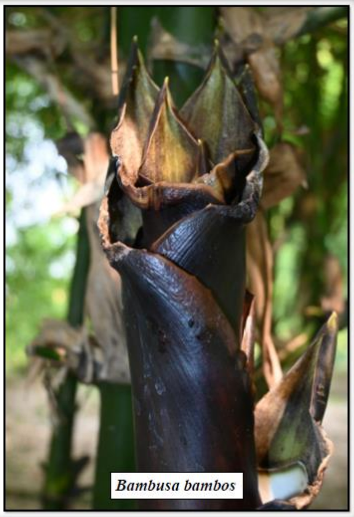
Bambusa bambos

Bambusa balcooa

Dendrocalamus giganteus

Bambusa vulgaris 'Striata'

Bambusa vulgaris 'Wamin'

Bambusa tulda

Dendrocalamus giganteus

Bambus vulgaris 'Green'

Thyrsostachys oliveri

Bamboo Bugs (Notobitus sexguttatus)

Bambusa polymorpha

मोबाइल एप्प

उत्तर प्रदेश के किसानों और वृक्ष उत्पादकों के लिए एंड्रॉयड आधारित निम्नलिखित मोबाइल एप्प विकसित किए गए–

BambooGrow- बाँस की प्रजातियों और प्रबंधन के सुझाव।

Agroforest- उत्तर प्रदेश के विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों के लिए उपयुक्त कृषिवानिकी मॉडलों के सुझाव।

EcoRehab- उत्तर प्रदेश की विभिन्न भूमि के लिए वृक्ष उपयुक्तता।

LKP-Info-उपयोगी अल्प ज्ञात पौधे की विस्तृत जानकारी।

राशि चक्र

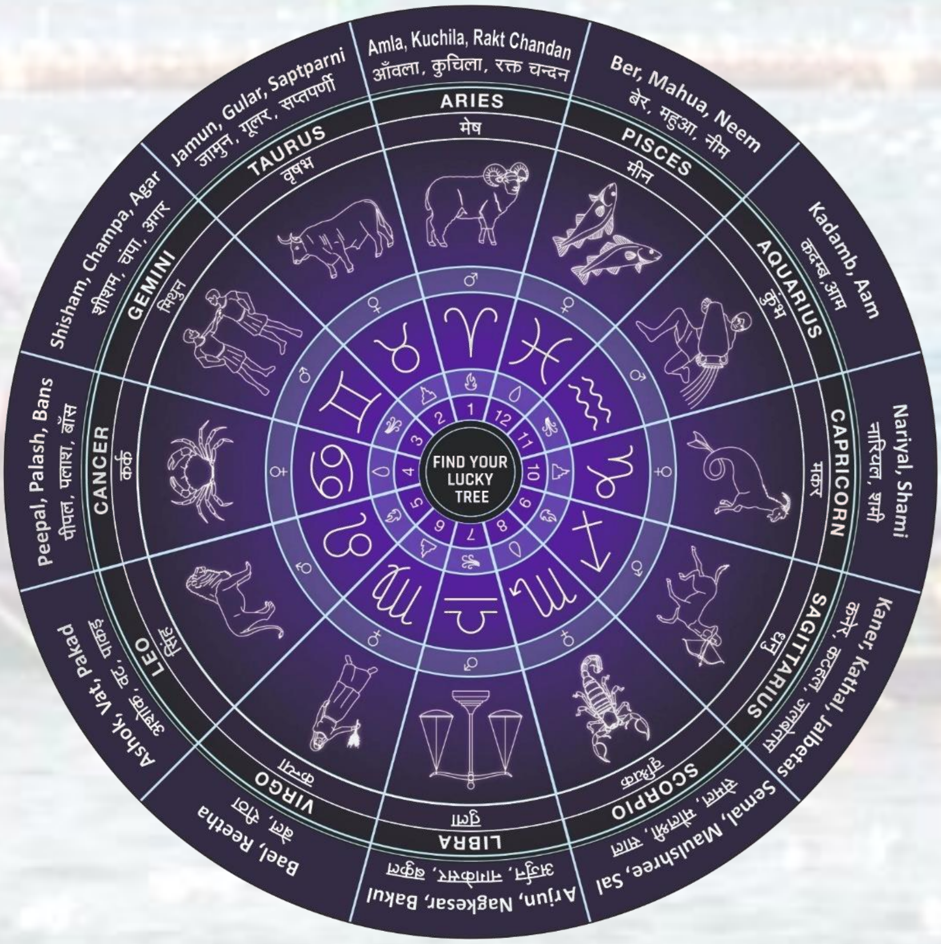

राशि चक्र

भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा **"प्रकृति महाकुंभ–पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर"** में राशि चक्र स्थापित किया गया, जिसके अनुसार पौधे लगाने से व्यक्ति को ग्रहों की शुभता प्राप्त होती है तथा जीवन में सुख–समृद्धि का विकास होता है।

मान्यता है कि यदि आप अपनी राशि और उसके स्वामी ग्रह को ध्यान में रखते हुए घर में पौधे लगाते हैं तो आपके जीवन में सदैव खुशहाली बनी रहेगी।

सगंध पौधा किसानों के लिए लाभकारी: संजय सिंह

महाकुंभ–2025 में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद की ओर से स्थापित प्रकृति महाकुंभ–वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में एरोमा मिशन के अंतर्गत सगंध पौधों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज व सीएसआईआर, लखनऊ के कार्यक्रम में केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने कहा कि कृषि वानिकी में सगंध पौधे किसानों के लिए लाभकारी हैं। इसको अपनाने से किसानों की आय में वृद्धि संग पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलता है। विशिष्ट अतिथि केन्द्रीय औषधीय अनुसंधान संस्थान, लखनऊ की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ऋतु द्विवेदी ने सगंध पौधे की खेती के जरिए हरित आवरण की वृद्धि के महत्व को रेखांकित किया। शिविर में बाँस गैलरी का उद्‌घाटन डॉ. हरीश एस. गिनवाल द्वारा किया गया। सीएसआईआर के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत निर्माण के लिए एरोमा मिशन सहायक सिद्ध हो रहा है। कार्यक्रम में प्रतिभागिता कर रहे सौ से अधिक किसानों को लेमन ग्रास व खस का पौधा वितरित किया गया। कार्यक्रम में डॉ. प्रबोध कुमार द्विवेदी, डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव, डॉ. अनुभा श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

PRAKRITI MAHAKUMBH

PRAKRITI MAHAKUMBH

सुगंधित महाकुंभ
FORESTRY AND ENVIRONMENT AWARENESS
INDIAN COUNCIL OF FORESTRY RESEARCH & EDUCATION,
ऋतु त्रिवेदी
संजय सिंह
प्रबोध कुमार त्रिवेदी
हरीश गिनवाल
संजय कुमार

PRAKRITI MAHAKUMBH
अनावरण कार्यक्रम
किसान मेला-2025

PRAKRITI MAHAKUMBH

वानिकी, पर्यावरण चेतना शिविर में एरोमा मिशन के अंतर्गत सगंध पौधों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

कार्यालय संवाददाता

प्रयागराज। महाकुम्भ क्षेत्र में भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद द्वारा स्थापित प्रकृति महाकुम्भ-वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं सी.एस.आई.आर - सीमैप, लखनऊ के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 24.01.2024 को एरोमा मिशन के अंतर्गत सगंध पौधों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं पौध सामग्री वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मंचासीन अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह द्वारा स्वागत भाषण में कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने बताया कि कृषिवानिकी में सगंध पौधों को अपनाने के द्वारा किसानों की आय में वृद्धि के साथ ही पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के हेतु इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। विशिष्ट अतिथि डॉ. ऋतु त्रिवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, केन्द्रीय औषधीय अनुसन्धान संस्थान, लखनऊ द्वारा सगंध पौधों की खेती द्वारा हरित आवरण वृद्धि पर प्रकाश डाला गया। आयोजित कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. हरीश एस गिनवाल, निदेशक, उष्ण कटिबँधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर ने आयोजित एरोमा मिशन की सराहना करते हुए औषधीय पौधों एवं सगंध पौधों के मूल्य वर्धन द्वारा किसानों की आय तथा वनावरण की वृद्धि हेतु भारतवर्ष में स्थित परिषद के संस्थानों व केन्द्र के विशेष योगदान पर प्रकाश डाला। शिविर में स्थापित बाँस गैलरी का उद्घाटन डॉ. गिनवाल द्वारा किया गया, जिसमें बाँस के विभिन्नप्रजातियों एवं उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। सीमैप के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार ने सभा को सम्बोधित करते हुए सीमैप की गतिविधियों से अवगत कराया साथ ही कहा कि आत्मनिर्भर भारत निर्माण हेतु एरोमा मिशन सहायक सिद्ध हो रहा है। सीमैप के निदेशक, डॉ. प्रबोध कुमार त्रिवेदी ने सुगंधित पौधों विशेषतः मेंथा की खेती के व्यावसायिक महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज भारत को मेंथा के उत्पादन में उत्तर प्रदेश के किसानों द्वारा ही अग्रणी स्थान प्राप्त हुआ है, मेंथा की खेती द्वारा एक हेक्टेअर से लगभग रुपया पचास हजार का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। सीमैप, लखनऊ के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रमेश श्रीवास्तव द्वारा खस तथा लेमन ग्रास की खेती के व्यावहारिक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। साथ ही कार्यक्रम में प्रतिभागिता कर रहे 100 से अधिक कृषकों को लेमन ग्रास व खस की पौध सामग्री वितरित की गयी। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा वानिकी, पर्यावरण एवं चेतना शिविर का भ्रमण कराया गया। कार्यक्रम का सफल समन्वयन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। आयोजित कार्यक्रम में केन्द्र के विभिन्न अधिकारी एवं कर्मचारीगण आदि उपस्थित रहे।

सगंध पौधों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

उर्ध्व नेत्र

प्रयागराज। महाकुम्भ क्षेत्र में भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद द्वारा स्थापित प्रकृति महाकुम्भ-वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं सी.एस.आई.आर - सीमैप, लखनऊ के संयुक्त तत्वाधान में शुक्रवार को एरोमा मिशन के अंतर्गत सगंध पौधों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं पौध सामग्री वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंचासीन अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह द्वारा स्वागत भाषण में कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने बताया कि कृषिवानिकी में सगंध पौधों को अपनाने के द्वारा किसानों की आय में वृद्धि के साथ ही पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के हेतु इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। विशिष्ट अतिथि डॉ. ऋतु त्रिवेदी, वरिष्ठ

वैज्ञानिक, केन्द्रीय औषधीय अनुसन्धान संस्थान, लखनऊ द्वारा सगंध पौधों की खेती द्वारा हरित आवरण वृद्धि पर प्रकाश डाला गया। आयोजित कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. हरीश एस गिनवाल, निदेशक, उष्ण कटिबँधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर ने आयोजित एरोमा मिशन की सराहना करते हुए औषधीय पौधों एवं सगंध पौधों के मूल्य वर्धन द्वारा किसानों की आय तथा वनावरण की वृद्धि हेतु भारतवर्ष में स्थित परिषद के संस्थानों व केन्द्र के विशेष योगदान पर प्रकाश डाला। शिविर में स्थापित बाँस गैलरी का उद्घाटन डॉ. गिनवाल द्वारा किया गया, जिसमें बाँस के विभिन्न प्रजातियों एवं उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। सीमैप के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार ने सभा को सम्बोधित करते हुए सीमैप की गतिविधियों से अवगत कराया साथ ही कहा कि आत्मनिर्भर भारत निर्माण हेतु एरोमा मिशन सहायक सिद्ध हो रहा है। सीमैप के निदेशक, डॉ. प्रबोध कुमार त्रिवेदी ने सुगंधित पौधों विशेषतः मेंथा की खेती के व्यावसायिक महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज भारत को मेंथा के उत्पादन में उत्तर प्रदेश के किसानों द्वारा ही अग्रणी स्थान प्राप्त हुआ है, मेंथा की खेती द्वारा एक हेक्टेअर से लगभग रुपया पचास हजार का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। सीमैप, लखनऊ के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रमेश श्रीवास्तव द्वारा खस तथा लेमन ग्रास की खेती के व्यावहारिक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। साथ ही कार्यक्रम में प्रतिभागिता कर रहे 100 से अधिक कृषकों को लेमन ग्रास व खस की पौध सामग्री वितरित की गयी। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा वानिकी, पर्यावरण एवं चेतना शिविर का भ्रमण कराया गया। कार्यक्रम का सफल समन्वयन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। आयोजित कार्यक्रम में केन्द्र के विभिन्न अधिकारी एवं कर्मचारीगण आदि उपस्थित रहे।

सगंध पौधों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

विद्रोही सामना संवाददाता

प्रयागराज। महाकुम्भ क्षेत्र में भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद द्वारा स्थापित प्रकृति महाकुम्भ-वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं सी.एस.आई.आर - सीमैप, लखनऊ के संयुक्त तत्वाधान में एरोमा मिशन के अंतर्गत सगंध पौधों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं पौध सामग्री वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंचासीन अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह द्वारा स्वागत भाषण में कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने बताया कि कृषिवानिकी में सगंध पौधों को अपनाने के द्वारा किसानों की आय में वृद्धि के साथ ही पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के हेतु इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. ऋतु त्रिवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, केन्द्रीय औषधीय अनुसन्धान संस्थान, लखनऊ द्वारा सगंध पौधों की खेती द्वारा हरित आवरण वृद्धि पर प्रकाश डाला गया।

आयोजित कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. हरीश एस गिनवाल, निदेशक, उष्ण कटिबँधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर ने आयोजित एरोमा मिशन की सराहना करते हुए औषधीय पौधों एवं सगंध पौधों के मूल्य वर्धन द्वारा किसानों की आय तथा वनावरण की वृद्धि हेतु भारतवर्ष में स्थित परिषद के संस्थानों व केन्द्र के विशेष योगदान पर प्रकाश डाला। शिविर में स्थापित बाँस गैलरी का उद्घाटन डॉ. गिनवाल द्वारा किया गया, जिसमें बाँस के विभिन्न प्रजातियों एवं उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। सीमैप के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार ने सभा को सम्बोधित करते हुए सीमैप की गतिविधियों से अवगत कराया साथ ही कहा कि आत्मनिर्भर भारत निर्माण हेतु एरोमा मिशन सहायक सिद्ध हो रहा है। सीमैप के निदेशक, डॉ. प्रबोध कुमार त्रिवेदी ने सुगंधित पौधों विशेषतः मेंथा की खेती के व्यावसायिक महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज भारत को मेंथा के उत्पादन में उत्तर प्रदेश के किसानों द्वारा ही अग्रणी स्थान प्राप्त हुआ है, मेंथा की खेती द्वारा एक हेक्टेअर से लगभग रुपया पचास हजार का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। सीमैप, लखनऊ के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रमेश श्रीवास्तव द्वारा खस तथा लेमन ग्रास की खेती के व्यावहारिक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। साथ ही कार्यक्रम में प्रतिभागिता कर रहे 100 से अधिक कृषकों को लेमन ग्रास व खस की पौध सामग्री वितरित की गयी। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा वानिकी, पर्यावरण एवं चेतना शिविर का भ्रमण कराया गया। कार्यक्रम का सफल समन्वयन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। आयोजित कार्यक्रम में केन्द्र के विभिन्न अधिकारी एवं कर्मचारीगण आदि उपस्थित रहे।

सगंध पौधा किसानों के लिए लाभकारी : संजय सिंह

प्रकृति महाकुम्भ–वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में मौजूद अतिथि।

महाकुम्भ नगर, संवाददाता। मेला क्षेत्र में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद की ओर से स्थापित प्रकृति महाकुम्भ–वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में एरोमा मिशन के अंतर्गत सगंध पौधों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ। पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र, प्रयागराज व सीएसआईआर लखनऊ के कार्यक्रम में केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने कहा कि कृषि वानिकी में सगंध पौधे किसानों के लिए लाभकारी है। इसको अपनाने से किसानों की आय में वृद्धि संग पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलता है।

विशिष्ट अतिथि केंद्रीय औषधीय अनुसंधान संस्थान लखनऊ की डॉ. ऋतु द्विवेदी ने सगंध पौधे की खेती के जरिए हरित आवरण की वृद्धि के महत्व को रेखांकित किया। शिविर में बांस गैलरी का उद्घाटन डॉ. हरीश एस गिनवाल ने किया। सीएसआईआर के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत निर्माण के लिए एरोमा मिशन सहायक सिद्ध हो रहा है। कार्यक्रम में प्रतिभागिता कर रहे सौ से अधिक किसानों को लेमन ग्रास व खस का पौधा वितरित किया गया। कार्यक्रम में डॉ. प्रबोध कुमार द्विवेदी, आलोक यादव, डॉ. अनुभा श्रीवास्तव, डॉ. अनीता तोमर आदि मौजूद रहे।

WASTE TO WEALTH

TREE RICH BIOBOOSTER
WASTE TO WEALTH

THINK GREEN

IRONMENT
anges in my life style to
nment. I resolute for tree
ation. I also commit to
friends and other common
of environment friendly
FORESTER
TREE RICH BIOBOOSTER

VIRONMENT
hanges in my life style to
nment. I resolute for tree
ation. I also commit to
friends and other common
of environment friendly
FORESTER

THINK GREEN

प्रकृति महाकुंभ

पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर

नाटक के माध्यम से भीख न मांगने का दिया सन्देश

महाकुभ नगर में भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज की ओर से सेक्टर एक में स्थित प्रकृति महाकुम्भ–वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में नाट्य मंचन के माध्यम से भीख नहीं देने का सन्देश दिया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह द्वारा शिविर में आए दर्शकों तथा नाट्य कलाकारों का स्वागत करते हुए नाटक के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया। उन्होने बताया कि भिखारियों को भिक्षा देने से व्यसन, शोषण के साथ ही संगठित अपराध में होने वाली वृद्धि के प्रति जागरूकता पैदा करने हेतु उक्त नाट्य का मंचन किया गया है। इसी क्रम में उन्होने बताया कि नाटक के माध्यम से यह सन्देश दिया गया है कि भिखारियों को पैसे देने के स्थान पर उन्हें विभिनन सरकारी योजनाओं तथा कौशल विकास से सक्षम बनाकर, उन्हे सरकारी योजनाओं तक पहुंचने में मदद करके गरीबों के उत्थान में मदद करना चाहिए। आयोजित नाटक को बैकस्टेज के विभिन्न कलाकारों यथा अमर सिंह, अनुज कुमार, प्रत्युस वर्सने, हीर, प्रदीप कुमार तथा पिन्टू प्रयागी आदि द्वारा प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया। प्रो. पूनम मित्तल, समाज सेविका द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। कार्यक्रम में प्रख्यात रंगकर्मी एवं निर्देशक प्रवीण शेखर के साथ केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक अनीता तोमर, आलोक यादव तथा कुमुद दूबे के साथ अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी आदि उपस्थित थे। नाटक के आयोजन हेतु वित्तीय सहायता शकुन्तला चन्द्रा द्वारा अपने बेटे डॉ. मुकुल चन्द्रा की याद में प्रदान की गयी, जो कि डेटन, ओहायो, यूएसए के एक प्रमुख हृदय रोग विशेषज्ञ थे, जिनका देहान्त अक्टूबर 2020 में कोविड–19 के कारण हो गया था।

PRAKRITI MAHAKUMB
FORESTRY AND ENVIRONMENT AWARENESS CA

PRAKRITI MAHAKUMBH

PRAKRITI MAHAKUMB
FORESTRY AND ENVIRONMENT AWARENESS CA

PRAKRITI MAHAKUMBH

PRAKRITI MAHAKUMBH

PRAKRITI MAHAK
FORESTRY AND ENVIRONMENT AWARENESS

नाटक में भीख न मांगने का दिया संदेश

पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र की ओर से किया गया नाटक का मंचन।

महाकुम्भ नगर, संवाददाता। पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र की ओर सेक्टर एक में स्थित प्रकृति महाकुम्भ वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में गुरुवार को नाटक भीख नहीं दें का मचंन किया गया। नाटक की प्रस्तुति बैकस्टेज के कलाकारों ने की। स्वागत संबोधन में केंद्र प्रमुख डॉ.संजय सिंह ने किया।

उन्होंने कहा कि नाटक के माध्यम से भिखारियों को भिक्षा देने से व्यसन, शोषण के साथ ही संगठित अपराध में होने वाली वृद्धि के प्रति जागरूक करना था। इससे यह भी संदेश दिया गया कि भिखारियों को पैसे देने के स्थान पर उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं और कौशल विकास के माध्यम से मदद करनी चाहिए। कलाकारों में अमर सिंह, अनुज कुमार, प्रत्यूष वर्सने, हीर, प्रदीप कुमार, पिंटू प्रयागी रहे। संचालन केन्द्र की वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव आभार ज्ञापन प्रो. पूनम मित्तल ने किया।

'भीख नहीं...दें' विषय पर नाटक का आयोजन

कार्यालय संवाददाता

सिंह द्वारा शिविर में आए दर्शकों

के माध्यम से यह सन्देश दिया गया

द्वारा प्रस्तुत किया गया। इनमें अमर सिंह, अनुज कुमार, प्रत्यूष वर्सने, हीर, प्रदीप कुमार, पिंटू प्रयागी आदि द्वारा प्रभावशाली ढंग से भूमिकाएं निभाई गयी। कार्यक्रम का संचालन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया। प्रो. पूनम मित्तल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। कार्यक्रम में प्रख्यात रंगकर्मी एवं निर्देशक प्रवीण शेखर के साथ केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव तथा कुमुद दूबे के साथ अन्य कर्मचारी गण आदि उपस्थित थे।

'भीख नहीं दें' नाटक का हुआ मंचन, बजी तालियां

विद्रोही सामना संवाददाता

प्रयागराज। कुम्भ नगर में पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा लगाए गए प्रकृति महाकुम्भ - वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में दिनांक 23.01.2025 को 'भीख नहीं...दें' विषय पर नाटक का मंचन किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह द्वारा शिविर में आए दर्शकों तथा नाट्य कलाकारों का स्वागत करते हुए नाटक के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भिखारियों को भिक्षा देने से व्यसन, शोषण के साथ ही संगठित अपराध में होने वाली वृद्धि के प्रति जागरूकता पैदा करने हेतु किया गया था। इसी क्रम में उन्होंने बताया कि नाटक के माध्यम से यह सन्देश दिया गया है कि भिखारियों को पैसे देने के स्थान पर उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं तथा कौशल विकास से सक्षम बनाकर, उन्हें सरकारी योजनाओं तक पहुंचने में मदद करके गरीबों के उत्थान में मदद करना चाहिए। आयोजित नाटक को बैकस्टेज, प्रयागराज के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। इनमें अमर सिंह, अनुज कुमार, प्रत्यूष वर्सने, हीर, प्रदीप कुमार, पिंटू प्रयागी आदि द्वारा प्रभावशाली ढंग से भूमिकाएं निभाई गयी। कार्यक्रम का संचालन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया। प्रो. पूनम मित्तल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। कार्यक्रम में प्रख्यात रंगकर्मी एवं निर्देशक प्रवीण शेखर के साथ केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव तथा कुमुद दूबे के साथ अन्य कर्मचारी गण आदि उपस्थित थे। नाटक के आयोजन हेतु वित्तीय सहायता शकुंतला चंद्रा द्वारा अपने बेटे डॉ. मुकुल चंद्रा की याद में प्रदान की गयी, जो कि डेटन, ओहायो, यूएसए के एक प्रमुख हृदय रोग विशेषज्ञ थे, जिनका देहांत अक्टूबर 2020 में कोविड-19 के कारण हो गया था।

भीख नहीं...दें विषय पर नाटक का आयोजन

बीके यादव/बालजी दैनिक

प्रयागराज - कुम्भ नगर में भा.वा.अ.शि.प. - पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा लगाए गए प्रकृति महाकुम्भ - वानिकी एवं पर्यावरण जागरूकता शिविर में दिनांक 23.01.2025 को भीख नहीं...दें विषय पर नाटक का मंचन किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह द्वारा शिविर में आए दर्शकों तथा नाट्य कलाकारों का स्वागत करते हुए नाटक के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भिखारियों को भिक्षा देने से व्यसन, शोषण के साथ ही संगठित अपराध में होने वाली वृद्धि के प्रति जागरूकता पैदा करने हेतु किया गया था। इसी क्रम में उन्होंने बताया कि नाटक के माध्यम से यह सन्देश दिया गया है कि भिखारियों को पैसे देने के स्थान पर उन्हें विभिन्न

सरकारी योजनाओं तथा कौशल विकास से सक्षम बनाकर, उन्हें सरकारी योजनाओं तक पहुंचने में मदद करके गरीबों के उत्थान में मदद करना चाहिए। आयोजित नाटक को बैकस्टेज, प्रयागराज के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। इनमें अमर सिंह, अनुज कुमार, प्रत्यूष वर्सने, हीर, प्रदीप कुमार, पिंटू प्रयागी आदि द्वारा प्रभावशाली ढंग से भूमिकाएं निभाई गयी। कार्यक्रम का संचालन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया। प्रो. पूनम मित्तल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। कार्यक्रम में प्रख्यात रंगकर्मी एवं निर्देशक प्रवीण शेखर के साथ केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव तथा कुमुद दूबे के साथ अन्य कर्मचारी गण आदि उपस्थित थे। नाटक के आयोजन हेतु वित्तीय सहायता शकुंतला चंद्रा द्वारा अपने बेटे डॉ. मुकुल चंद्रा की याद में प्रदान की गयी, जो कि डेटन, ओहायो, यूएसए के एक प्रमुख हृदय रोग विशेषज्ञ थे, जिनका देहांत अक्टूबर 2020 में कोविड-19 के कारण हो गया था।

Drama on theme 'Don't give alms' organized

AKHAND BHARAT SANDESH

Prayagraj: A play on the theme 'Don't give alms' was staged on Thursday in the Prakriti Mahakumbh - Forestry and Environment Awareness Camp organized by the Ecological Restoration Centre, Prayagraj. Center head Dr. Sanjay Singh, while welcoming the audience and drama artists who came to the camp, highlighted the main objective of the drama. He said that giving alms to beggars was done to create awareness about addiction, exploitation as well as the increase in organized crime. In the same sequence, he told that through the play, the message has been given that instead of giving money to beggars, we should help in the upliftment of the poor by making them capable through various government schemes and skill development, and by helping them access government schemes. The drama organized was presented by the artists of Backstage, Prayagraj. In these, roles were played effectively by Amar Singh, Anuj Kumar, Pratyush Varsane, Heer,

Pradeep Kumar, Pintu Prayagi etc. The program was conducted by Dr. Anubha Srivastava, senior scientist of the center. Pro. Vote of thanks was given by Poonam Mittal.

Renowned theater artist and director Praveen Shekhar along with senior scientists of the center Dr. Anita Tomar, Alok Yadav and Kumud Dubey along with other staff members were present in the program. Financial assistance for organizing the play was provided by Shakuntala Chandra in memory of her son Dr. Mukul Chandra, a leading cardiologist in Dayton, Ohio, USA, who died of COVID-19 in October 2020.

भारतीय वानिकी अनुसंधान
(पर्यावरण, वन एवं जलवायु

THINK GREEN
LIVE GREEN

Bamboo Grow

प्रकृति महाकुंभ

पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर का

माननीय महानिदेशक

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा भ्रमण

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा प्रकृति महाकुंभ–2025 पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर, पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा स्थापित शिविर का माननीय महानिदेशक, श्रीमती कंचन देवी, भा.व.से., महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद एवं कुलाधिपति, वन अनुसंधान संस्थान समविश्वविद्यालय, देहरादून द्वारा दिनांक 15.02.2025 को भ्रमण किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने माननीय महानिदेशक का स्वागत करते हुए कहा कि वन और नदी पारिस्थितिकी तंत्र एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वनों के संरक्षण एवं वन क्षेत्र बढ़ाने से नदियों की स्वच्छता एवं अविरलता सुनिश्चित होती है। माननीय महानिदेशक ने उद्बोधन में नदी पुनरूद्धार एवं पर्यावरण सुधार के लिए परिषद की ओर से देश की 14 प्रमुख नदियों को पुनर्जीवित करने के उपक्रमों के बारे में जानकारी दिया साथ ही पूर्वी उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के पुनरूद्धार व प्रयागराज केन्द्र के प्रयासों की सराहना किया। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रदर्शन शिविर समन्वयक श्री आलोक यादव ने पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर के क्रियाकलापो की जानकारी दिया। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा मुख्य अतिथि को चेतना शिविर का भ्रमण कराया गया, जिसमें विशेषतः बाँस गैलरी, कृषिवानिकी एवं मियावाकी पद्धति के सजीव मॉडल्स, औषधीय पौधे, बायोप्रोडक्ट्स, पर्यावरण शपथ–डेस्क, राशि–चक्र एवं वानिकी सम्बन्धी प्रसार सामग्री आदि से अवगत कराया गया। आभार ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर तथा संचालन डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया। कार्यक्रम में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे तथा तकनीकी सहायक, धर्मेन्द्र कुमार आदि उपस्थित रहे।

भा.वा.अ.शि.प.- पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र
ICFRE- ERC

BIOBOOSTER

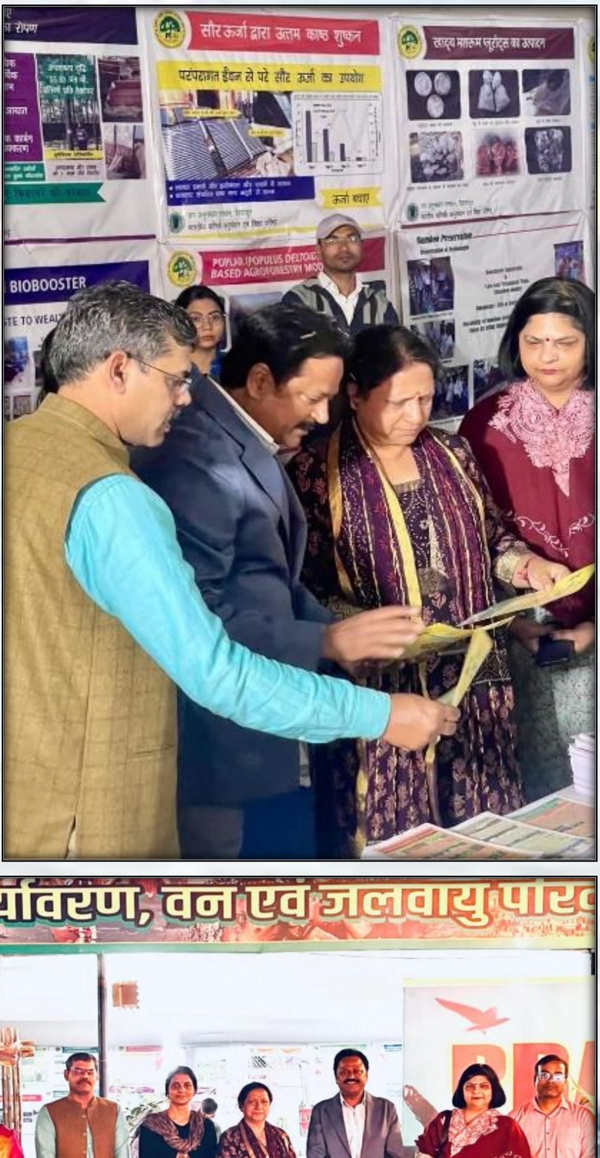
सौर ऊर्जा द्वारा उत्तम काष्ठ शुष्कन
BIOBOOSTER

(पर्यावरण, वन एवं जलवायु

वानिकी उपक्रमों से होगा नदी पुनरुद्धार : कंचन देवी

संगम शपथ संवाददाता

प्रयागराज। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के निर्देशन में पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा महाकुम्भ-2025 में चल रहे प्रकृति महाकुम्भ - पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर में वृक्षारोपण के माध्यम से नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की मुख्य अतिथि कंचन देवी, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद एवं कुलाधिपति वन अनुसंधान संस्थान समविश्वविद्यालय, देहरादून द्वारा नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार हेतु परिषद द्वारा देश भर की 14 प्रमुख नदियों को पुनर्जीवित करने के उपक्रमों के सम्बन्ध में विस्तृत व्याख्यान दिया।

साथ ही पूर्वी उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के पुनरुद्धार पर प्रयागराज केन्द्र द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार में वानिकी की भूमिका पर चर्चा करते हुए बताया कि वन और नदी पारिस्थितिकी तंत्र एक दूसरे से जुड़े हुए है। वनों के संरक्षण एवं वन क्षेत्र बढ़ाने से नदियों की स्वच्छता एवं अविरलता सुनिश्चित होती है। शिविर समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव द्वारा महानिदेशक एवं उपस्थित गणमान्य अतिथियों को स्थापित प्रदर्शनी का भ्रमण कराया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। उक्त आयोजित संगोष्ठी में लगभग 50 वैज्ञानिक एवं पर्यावरणविद सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का सफल संचालन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया।

Forestry initiatives will lead to river revival: Kanchan Devi

Staff Reporter

Prayagraj: Under the guidance of Indian Council of Forestry Research and Education, Ecological Restoration Center, Prayagraj organized a one-day seminar on the subject of river revival and environmental improvement through tree plantation in the ongoing Prakriti Mahakumbh - Environment and Forestry Awareness Camp in Mahakumbh-2025. Chief Guest of the seminar Kanchan Devi, Director General, Indian Council of Forestry Research and Education and Chancellor Forest Research Institute Deemed University, Dehradun gave a detailed lecture regarding the initiatives of the Council to revive 14 major rivers across the country for river revival and environmental improvement. Also, the efforts being made by Prayagraj Center on the revival of Ganga River in eastern Uttar Pradesh were appreciated. Center Head Dr. Sanjay Singh, while discussing the role of forestry in river revival and environmental improvement, said that forest and river ecosystems are interconnected. Conservation of forests and increasing forest area ensures cleanliness and continuity of rivers. Camp coordinator and senior scientist Alok Yadav took the Director General and the dignitaries present on a tour of the exhibition set up. Senior scientist Dr. Anita Tomar gave the vote of thanks. About 50 scientists and environmentalists participated in the above-mentioned seminar. The program was successfully conducted by the centre's senior scientist Dr. Anubha Shrivastava.

वानिकी उपक्रमों से होगा नदी पुनरुद्धार : कंचन देवी

(सहजसत्ता संवाददाता)

प्रयागराज। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के निर्देशन में पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा महाकुम्भ-2025 में चल रहे प्रकृति महाकुम्भ - पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर में वृक्षारोपण के माध्यम से नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की मुख्य अतिथि कंचन देवी, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद एवं कुलाधिपति वन अनुसंधान संस्थान समविश्वविद्यालय, देहरादून द्वारा नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार हेतु परिषद द्वारा देश भर की 14 प्रमुख नदियों को पुनर्जीवित करने के उपक्रमों के सम्बन्ध में विस्तृत व्याख्यान दिया। साथ ही पूर्वी उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के पुनरुद्धार पर प्रयागराज केन्द्र द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार में वानिकी की भूमिका पर चर्चा करते हुए बताया कि वन और नदी पारिस्थितिकी तंत्र एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

वनों के संरक्षण एवं वन क्षेत्र बढ़ाने से नदियों की स्वच्छता एवं अविरलता सुनिश्चित होती है। शिविर समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव द्वारा महानिदेशक एवं उपस्थित गणमान्य अतिथियों को स्थापित प्रदर्शनी का भ्रमण कराया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। उक्त आयोजित संगोष्ठी में लगभग 50 वैज्ञानिक एवं पर्यावरणविद सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का सफल संचालन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया।

वानिकी उपक्रमों से होगा नदी का पुनरुद्धार

संगोष्ठी

महाकुम्भ नगर, संवाददाता। सेक्टर एक में स्थित भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के निर्देशन में संचालित पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र में प्रकृति महाकुम्भ पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर में सोमवार को संगोष्ठी आयोजित की गई।

पौधरोपण के माध्यम से नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार विषय हुई संगोष्ठी में मुख्य अतिथि महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद एवं कुलाधिपति वन अनुसंधान संस्थान समविश्वविद्यालय, देहरादून की महानिदेशक कंचन देवी ने विचार व्यक्त किए। उन्होंने नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार के लिए परिषद की ओर से देश की 14 प्रमुख नदियों को पुनर्जीवित करने के उपक्रमों के बारे में जानकारी दी। साथ ही पूर्वी उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के पुनरुद्धार व प्रयागराज केंद्र के प्रयासों की सराहना की। केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार में वानिकी की भूमिका पर विवार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि वन और नदी पारिस्थितिकी तंत्र एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वनों के संरक्षण एवं वन क्षेत्र बढ़ाने से नदियों की स्वच्छता एवं अविरलता सुनिश्चित होती है। आभार ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर संचालन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने किया। शिविर समन्वयक आलोक यादव, अंकुर श्रीवास्तव, वैज्ञानिक व पर्यावरणविद मौजूद रहे।

महाकुम्भ में चल रहे प्रकृति महाकुम्भ पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर में पौधरोपण के माध्यम से नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार विषय पर हुई संगोष्ठी में महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद कंचन देवी का अभिनंदन किया गया।

वानिकी उपक्रमों से होगा नदी पुनरुद्धार - कंचन देवी

उर्ध्व नेत्र

प्रयागराज।भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के निर्देशन में पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा महाकुम्भ–2025 में चल रहे प्रकृति महाकुम्भ – पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर में वृक्षारोपण के माध्यम से नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की मुख्य अतिथि कंचन देवी, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद एवं कुलाधिपति वन अनुसंधान संस्थान समविश्वविद्यालय, देहरादून द्वारा नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार हेतु परिषद द्वारा देश भर की 14 प्रमुख नदियों को पुनर्जीवित करने के उपक्रमों के सम्बन्ध में विस्तृत व्याख्यान दिया। साथ ही पूर्वी उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के पुनरुद्धार पर प्रयागराज केन्द्र द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार में वानिकी की भूमिका पर चर्चा करते हुए बताया कि वन और नदी पारिस्थितिकी तंत्र एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वनों के संरक्षण एवं वन क्षेत्र बढ़ाने से नदियों की स्वच्छता एवं अविरलता सुनिश्चित होती है। शिविर समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव द्वारा महानिदेशक एवं उपस्थित गणमान्य अतिथियों को स्थापित प्रदर्शनी का भ्रमण कराया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। उक्त आयोजित संगोष्ठी में लगभग 50 वैज्ञानिक एवं पर्यावरणविद सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का सफल संचालन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया।

वानिकी उपक्रमोंसे होगा नदी पुनरुद्धार : महानिदेशक

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के निर्देशन में पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र द्वारा महाकुम्भ–२०२५ में चल रहे प्रकृति महाकुम्भ–पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर में वृक्षारोपण के माध्यम से नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की मुख्य अतिथि कंचन देवी महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद एवं कुलाधिपति वन अनुसंधान संस्थान समविश्वविद्यालय देहरादून द्वारा नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार हेतु परिषद द्वारा देश भर की १४ प्रमुख नदियों को पुनर्जीवित करने के उपक्रमों के सम्बन्ध में विस्तृत व्याख्यान दिया। साथ ही पूर्वी उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के पुनरुद्धार पर प्रयागराज केन्द्र द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। केन्द्र प्रमुख डा.संजयँ सिंह ने नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार में वानिकी की भूमिका पर चर्चा करते हुए बताया कि वन और नदी पारिस्थितिकी तंत्र

एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वनों के संरक्षण एवं वन क्षेत्र बढ़ाने से नदियों की स्वच्छता एवं अविरलता सुनिश्चित होती है। शिविर समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव द्वारा अतिथियों को स्थापित प्रदर्शनी का भ्रमण कराया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा.अनीता तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। उक्त आयोजित संगोष्ठी में लगभग पचास वैज्ञानिक एवं पर्यावरणविद सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का संचालन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा.अनुभा श्रीवास्तव ने किया।

http://amritkalashtimes.com

अमृत कलश टाइम्स

प्रयागराज मंगलवार 18 फरवरी 2025

वानिकी उपक्रमों से होगा नदी पुनरुद्धार : कंचन देवी।

प्रयागराज। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के निर्देशन में पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र द्वारा महाकुम्भ–2025 में चल रहे प्रकृति महाकुम्भ – पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर में वृक्षारोपण के माध्यम से नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की मुख्य अतिथि कंचन देवी, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद एवं कुलाधिपति वन अनुसंधान

संस्थान समविश्वविद्यालय, देहरादून द्वारा नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार हेतु परिषद द्वारा देश भर की 14 प्रमुख नदियों को पुनर्जीवित करने के उपक्रमों के सम्बन्ध में विस्तृत व्याख्यान दिया। साथ ही पूर्वी उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के पुनरुद्धार पर प्रयागराज केन्द्र द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार में वानिकी की भूमिका पर चर्चा करते हुए बताया कि वन और नदी पारिस्थितिकी तंत्र एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वनों के संरक्षण एवं वन क्षेत्र बढ़ाने से नदियों की स्वच्छता एवं अविरलता सुनिश्चित होती है। शिविर समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव द्वारा महानिदेशक एवं उपस्थित गणमान्य अतिथियों को स्थापित प्रदर्शनी का भ्रमण कराया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। उक्त आयोजित संगोष्ठी में लगभग 50 वैज्ञानिक एवं पर्यावरणविद सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का सफल संचालन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा

वानिकी उपक्रमों से होगा नदी पुनरुद्धार : कंचन देवी

कार्यालय संवाददाता

प्रयागराज। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के निर्देशन में पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा महाकुम्भ-2025 में चल रहे प्रकृति महाकुम्भ - पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर में वृक्षारोपण के माध्यम से नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की मुख्य अतिथि कंचन देवी, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद एवं कुलाधिपति वन अनुसंधान संस्थान समविश्वविद्यालय, देहरादून द्वारा नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार हेतु परिषद द्वारा देश भर की 14 प्रमुख नदियों को पुनर्जीवित करने के उपक्रमों के सम्बन्ध में विस्तृत व्याख्यान दिया।

साथ ही पूर्वी उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के पुनरुद्धार पर प्रयागराज केन्द्र द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण सुधार में वानिकी की भूमिका पर चर्चा करते हुए बताया कि वन और नदी पारिस्थितिकी तंत्र एक दूसरे से जुड़े हुए है। वनों के संरक्षण एवं वन क्षेत्र बढ़ाने से नदियों की स्वच्छता एवं अविरलता सुनिश्चित होती है। शिविर समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव द्वारा महानिदेशक एवं उपस्थित गणमान्य अतिथियों को स्थापित प्रदर्शनी का भ्रमण कराया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। उक्त आयोजित संगोष्ठी में लगभग 50 वैज्ञानिक एवं पर्यावरणविद सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का सफल संचालन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया।

LIVE GREEN

THINK GREEN
LIVE GREEN

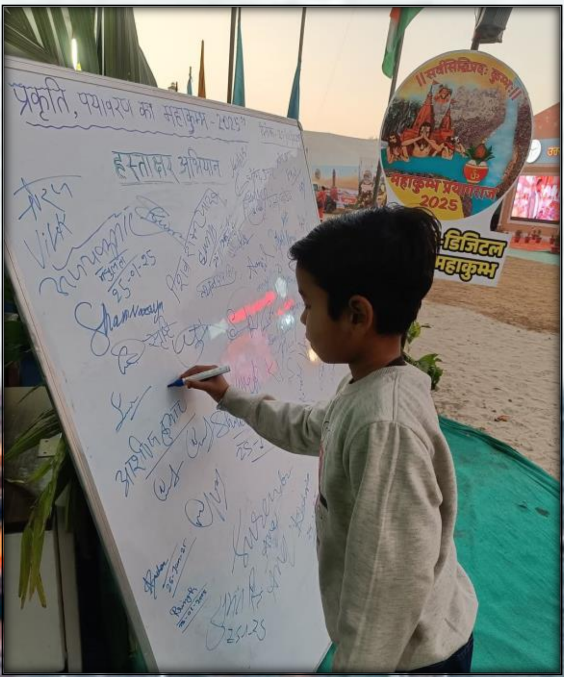
हस्ताक्षर अभियान
महाकुम्भ प्रयागराज
2025
डिजिटल
महाकुम्भ

Nature Protects if She is Protected
LIVE GREEN

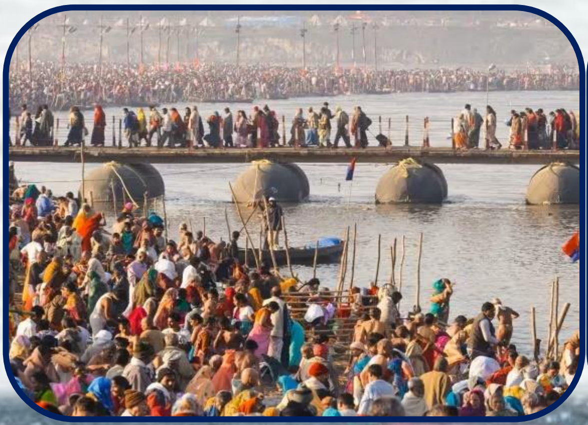

भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

(पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार)

3/1, लाजपत राय रोड, नया कटरा, प्रयागराज